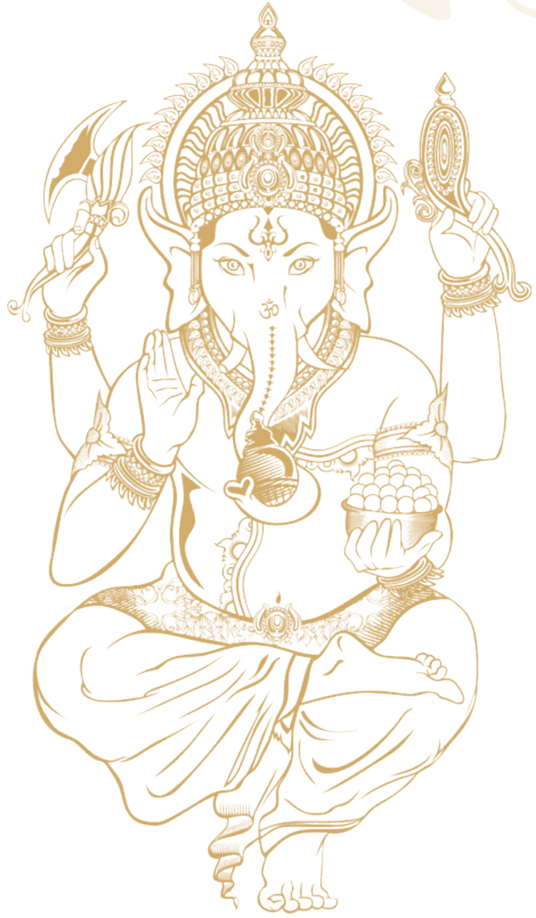

Hiya Aggrawal

04 Oct 2007

06:28 PM

Toronto

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119552401

तिथि 04/10/2007 **समय** 18:28:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Toronto **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:58:02
अक्षांश 43:39:00 उत्तर **रेखांश** 79:20:00 पश्चिम **मध्य रेखांश** 75:00:00 पश्चिम **स्थानिक संस्कार** -01:17:20 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	18:03:35 घं	गण	देव
वेलान्तर	00:11:14 घं	योनि	मेष
सूर्योदय	07:18:05 घं	नाड़ी	मध्य
सूर्यास्त	18:53:22 घं	वर्ण	विप्र
चैत्रादि संवत	2064	वश्य	जलचर
शक संवत	1929	वर्ग	मेष
मास	आश्विन	युँजा	मध्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	जल
तिथि	10	जन्म नामाक्षर	हू-हुकमसिंह
नक्षत्र	पुष्य	पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
योग	शिव	होरा	बुध
करण	वणिज	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी
शनि 15वर्ष 1मा 20दि
बुध
24/11/2022
24/11/2039

बुध	22/04/2025
केतु	19/04/2026
शुक्र	17/02/2029
सूर्य	24/12/2029
चन्द्र	26/05/2031
मंगल	22/05/2032
राहु	09/12/2034
गुरु	16/03/2037
शनि	24/11/2039

योगिनी
धान्या 2वर्ष 4मा 20दि
सिद्धा
23/02/2025
24/02/2032

सिद्धा	05/07/2026
संकटा	24/01/2028
मंगला	04/04/2028
पिंगला	24/08/2028
धान्या	26/03/2029
भ्रामरी	04/01/2030
भद्रिका	25/12/2030
उल्का	24/02/2032

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			07:42:05	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	केतु	---	0:00			
सूर्य			17:20:43	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	सम राशि	1.36	अमात्य	पितृ	साधक
चंद्र			06:02:33	कर्क	पुष्य	1	शनि	बुध	स्वराशि	1.32	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			08:38:37	मिथु	आर्द्रा	1	राहु	राहु	शत्रु राशि	1.27	पुत्र	भ्रातृ	मित्र
बुध			12:24:47	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.14	भ्रातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु			20:51:10	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	मित्र राशि	0.88	आत्मा	धन	सम्पत
शुक्र			03:30:11	सिंह	मघा	2	केतु	सूर्य	शत्रु राशि	1.17	कलत्र	कलत्र	विपत
शनि			09:54:11	सिंह	मघा	3	केतु	शनि	शत्रु राशि	1.46	मातृ	आयु	विपत
राहु			12:40:52	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			12:40:52	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

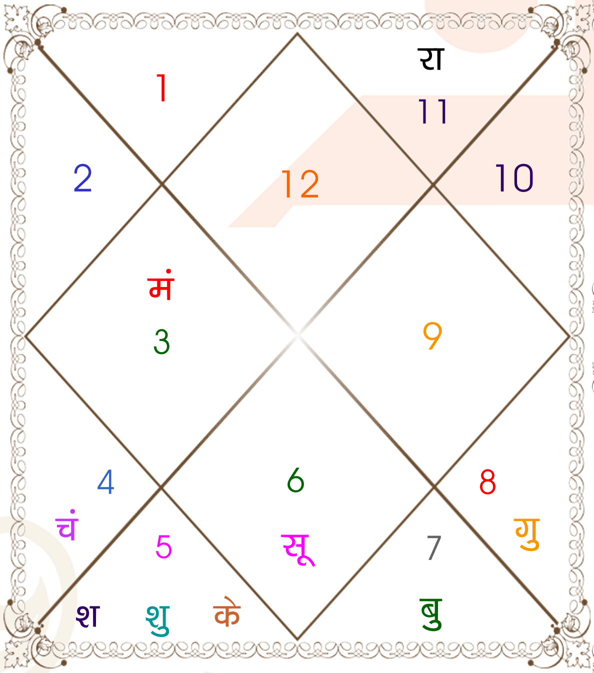

चन्द्र कुंडली

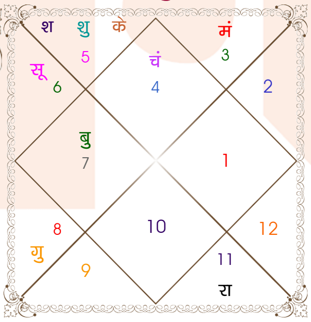

नवमांश कुंडली

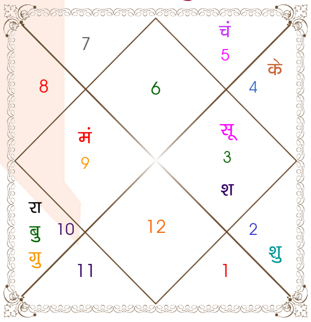

सर्वाष्टकवर्ग

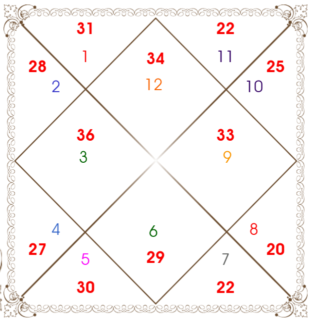

दशमांश कुंडली

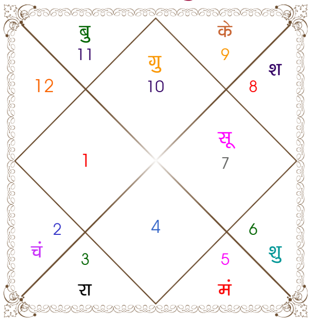

नक्षत्रफल

आपका जन्म पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण देव, नाड़ी मध्य, मेष योनि, विप्रवर्ण तथा मेष वर्ग होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हु" अक्षर से होगा।

आप देवताओं की पूजा से अर्जित धन से धनवान होंगे। बुद्धि आपकी तीव्र होगी तथा समस्त कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगे। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञाता होंगे। आप देखने में सुन्दर तथा सबके प्रिय रहेंगे तथा आपका जीवन समस्त सुखों के उपभोग करने में व्यतीत होगा। साथ ही आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

आपकी प्रवृति धार्मिक प्रवृति होगी तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण श्रद्धा एवं आस्था रहेगी। आपका हृदय हमेशा शान्त रहेगा तथा शान्तचित्त होकर ही आप अपने समस्त कार्यो को सम्पन्न करेंगे। साथ ही पुत्रों से भी आप युक्त रहेंगे।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरूष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

आप ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति अपने मन में श्रद्धा भाव रखेंगे तथा यथाशक्ति इनकी पूजा एवं सत्कार करते रहेंगे। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे। आप उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग के प्रिय रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा। आप अपने बन्धुवर्ग से भी युक्त रहेंगे तथा सबसे आपके अच्छे सामाजिक संबंध रहेंगे।

शान्तात्मा सुभगः पण्ळितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

आप हमेशा शारीरिक रूप से सुन्दर तथा स्वस्थ रहेंगे। माता पिता के प्रति आप

अपने कर्तव्य का पूर्ण रूप से निर्वाह करेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा करते रहेंगे। धर्मानुपालन की प्रवृति का भाव भी आपके मन में विद्यमान रहेगा। अन्य सामाजिक जनों के साथ आपका व्यवहार अत्यन्त ही विनयशील रहेगा। समाज में आप एक सम्मानीय व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक यश की भी आपको प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त धन तथा वाहनादि सुखों से भी आप सदैव युक्त रहेंगे।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय रहेगा तथा इसमें लावण्यता भी विद्यमान रहेगी। साथ ही मुखाकृति भी अत्यन्त आकर्षक रहेगी। इन्द्रियों को वश में करने में आप पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे तथा प्रायः सत्य ही बोलेंगे। आप अत्यन्त ही मधुर गति से गमन करने वाले होंगे। जीवन में धन तथा पुत्र से आप युक्त रहेंगे एवं इनका पूर्ण सुख आपको प्राप्त होगा। लेकिन स्त्री के आप हमेशा वश में रहेंगे तथा उसी के कथनानुसार अपने अधिकांश प्रमुख कार्यों को सम्पन्न करेंगे। स्वभाव से आप विनम्र एवं सुशील रहेंगे तथा धनैश्वर्य को भी आप नित्य अर्जित करेंगे एवं प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति भी होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न अधिक मित्रों से हमेशा युक्त रहेंगे। धनसंचय में भी आपकी प्रवृति रहेगी।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वास्थय मध्यम रहेगा। आप अपने सभी कार्यों को कुशलता पूर्वक सम्पन्न करेंगे तथा जीवन भर विपुल धन से युक्त होकर समाज में धनाढ्य कहलाएंगे। आप वीरता तथा पराक्रम के भाव से हमेशा युक्त रहेंगे। धार्मिक भावना का समावेश आपके मन में व्याप्त रहेगा तथा पूर्ण रूप से आप धर्मानुसरण करेंगे तथा इसका पालन भी करेंगे। गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण स्नेह प्राप्त होगा। आपकी बुद्धिमता के प्रभाव को सभी लोग ह्रदय से स्वीकार करेंगे। यदा कदा आपके अन्दर क्रोध की बहुलता भी दृष्टिगोचर होगी तथा साथ ही कभी कभी आप अत्यन्त दुःख का भी अनुभव करेंगे। आपके मित्र अच्छे तथा गुणों से युक्त होंगे साथ ही आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओ में भी निपुण होंगे। शारीरिक बल भी मध्यम रूप से आप में विद्यमान रहेगा। आप घर से स्थाई या अस्थाई रूप से अन्यत्र निवास करेंगे।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।

मानसागरी

आप वात तथा कफ प्रकृति से युक्त रहेंगे तथा आपका रूप भी सुन्दर तथा तेज युक्त होगा। आप अत्यन्त धनवान होंगे तथा स्वयं अपने परिश्रम से इस धन को अर्जन करेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं में आपकी पूर्ण आस्था रहेंगी तथा यथा समय इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा का प्रदर्शन करेंगे। श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आप सम्मान का भाव रखेंगे तथा इनकी सेवा तथा सहयोग करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।

जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के अध्ययन में भी आप रूचिशील होंगे तथा अपने अध्ययन तथा परिश्रम द्वारा इनका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अन्य कलाओं के भी जानने वाले होंगे तथा चाल चलन आपका उत्तम रहेगा। पुष्पों की सुगन्ध तथा जल के आप प्रेमी होंगे तथा इनकी प्राप्ति से आप आनन्दानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही समाज में आपकी कीर्ति पूर्ण रूप से व्याप्त रहेगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।

जातकाभरणम्

स्त्री से आप पूर्ण रूप से पराजित होकर उसके वश में रहेंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे तथा जलविहार के भी शौकीन रहेंगे। आपके द्वारा बहुत से भवन निर्मित होंगे अथवा आप स्वयं बहुत से मकानों के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपका कद सामान्य रहेगा तथा टेढी चाल से शीघ्र चलने की आपकी प्रवृति होगी। साथ ही पुत्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकर्टि्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।

फल दीपिका

आप अपने जीवन में विविध प्रकार की सम्पत्तियों को प्राप्त करेंगे ज्योतिष शास्त्र में आपकी पूर्ण आस्था होगी एवं इसका ज्ञान भी आपको रहेगा। आपका जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षय वृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात उतार चढाव तथा संघर्ष चलते रहेंगे। आपको केवल प्रेम या स्नेह से ही प्रसन्न रखा जा सकता हैं। दबाव या बलपूर्वक आप किसी के वश में नहीं आएंगे। आप अपने मित्रों को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करने वाले होंगे। आपकी जीव पालने, उद्यान, बागबगीचे तथा जलाशयों के निर्माण में विशेष रूचि रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।

ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङ्कैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप हमेशा सौभाग्य से युक्त रहेंगे तथा अपने समस्तकार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ होंगे। साथ ही आप मकान के स्वामी भी बनेंगे। आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत होगा। विनयशीलता आपका स्वाभाविक गुण होगा। समाज के अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनके उपकार को मानने वाले होंगे। साथ ही आप राज्य के किसी भी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकते हैं। सत्य के अनुपालन करने में आप आजीवन यत्नशील रहेंगे तथा सर्वथा सत्य तथा प्रिय ही बोलेंगे जिससे किसी अन्य को कोई भी कष्ट न हो।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आप श्रेष्ठ तथा मधुर वाणी का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता की प्राप्ति होगी। आप सरल बुद्धि से युक्त रहेंगे तथा इसमें कोई भी प्रपंच का समावेश नहीं रहेगा। सरल ढंग से आप अपनी बात अन्यों को कहेंगे तथा उसी तरह अन्य के विचारों को आत्मसात करेंगे। भोजन भी आप शुद्ध, अल्प तथा सात्विक लेना पसन्द करेंगे तथा गुणों के बारे में विस्तृत ज्ञान रखेंगे। आप स्वयं भी महान विद्वानों द्वारा प्रतिपादित गुणों से युक्त रहेंगे। इसके साथ ही धनैश्वर्य भी प्रचुर मात्रा में आपके पास रहेगा।

आपका शरीर देखने में सुन्दर तथा स्वस्थ होगा। आप स्वभाव से ही दानशील होंगे तथा जरूरत मन्द लोगों को यथा शक्ति दान तथा सेवा एवं सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आप सादगी पसन्द होंगे तथा दिखावे या भौतिक प्रपंचों से दूर ही रहेंगे। साथ ही समाज में एक श्रेष्ठ विद्वान के रूप में भी आपका सम्मान तथा आदर होगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मेष योनि में जन्म लेने के कारण आप उत्साह से हमेशा सम्पन्न रहेंगे। आप जो भी कार्य करेंगे उसे उत्साह के साथ पूर्ण करके छोड़ेंगे। योद्धा या शूरता के गुणों से आप युक्त

रहेंगे तथा आपकी प्रमुखता को सभी लोग स्वीकार करेंगे। युद्ध विद्या में भी आप अति निपुण होंगे। धनैश्वर्य तथा वैभव का आपके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इनका आप पूर्ण रूप से आजीवन उपभोग करने में समर्थ होंगे। दूसरे की भलाई करने की नैसर्गिक भावना का अनुशीलन करने के लिए आप नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं शारीरिक कष्ट की अनुभूति नहीं होगी। उनकी आयु भी लम्बी होगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। विविध प्रकार से धनार्जन करने में वे सफल रहेंगे तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना हार्दिक सहयोग देते रहेंगे। साथ ही आपके विवाह सम्पन्न करने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा एवं आप उनके विश्वास पात्र भी रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण सम्मान करेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए नित्य तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के उत्पन्न होने के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता हैं। फिर भी आप नित्य उनकी सेवा तथा वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आपको मध्यम सुख प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा परन्तु यदा कदा शरीर से वे अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा जीवन के समस्त शुभ एवं

महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में भी वे आपको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आजीविका एवं व्यापार संबंधी कार्यों में भी आपको उनका सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह का भाव विद्यमान रहेगा। आप के आपसी संबंध मधुर रहेंगे। परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर इसमें कटुता का भी वातावरण बनेगा लेकिन यह अस्थायी रहेगा। साथ ही सुख दुःख एवं समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में आप उन्हें अपना आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। इस प्रकार मिलजुल कर आप अपनी अधिकांश समस्याओं का समाधान करके प्रसन्नानुभूति प्राप्त करेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण बुधवार, प्रथम प्रहर तथा सिंह राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दाता होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य, 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग तथा नागकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कय विकय आदि महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि का ही योग बनेगा। साथ ही बुधवार, प्रथम प्रहर एवं सिंह राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए अच्छा समय नहीं चल रहा हो मानसिक या शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा सोमवार का श्रद्धापूर्वक उपवास करना चाहिए। साथ ही सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल, मिश्री आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।